25-05-2023

जनगणना में देरी

समाचार पत्रों में क्यों?

पिछले कुछ समय से कई विशेषज्ञों के द्वारा भारत सरकार द्वारा 2021 की जनगणना न कराए जाने को लेकर सवाल उठाए जा रहे हैं। जैसा कि हम जानते हैं कि 2021 की जनगणना को कोविड महामारी के कारण स्थगित करना पड़ा, भारत के जनगणना कार्यों के 150 साल के इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ कि यह कवायद समय पर पूरी नहीं हुई। सबसे बढ़कर जनगणना महामारी की समाप्ति और सामान्य स्थिति की बहाली के बाद भी लंबित है।

त्वरित मुद्दा?

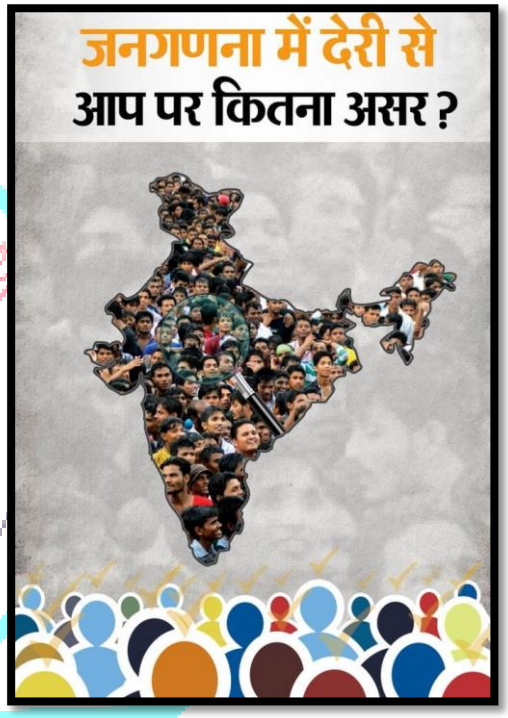

- जनगणना अनिवार्य रूप से एक दो चरणीय प्रक्रिया है जिसमें घरों की सूची बनाना और संख्यांकन करना शामिल है, जिसके बाद वास्तविक जनसंख्या की गणना की जाती है। जनगणना वर्ष के पूर्व वर्ष के मध्य में मकानों की सूची बनाने और संख्यांकन का कार्य किया जाता है। जनसंख्या गणना, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, फरवरी के दो से तीन सप्ताह में होती है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- जनगणना वर्ष में 1 मार्च की आधी रात में जनगणना द्वारा प्रकट की गई संख्या भारत की जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करती है।
- फरवरी में गणना अवधि के दौरान होने वाले जन्म और मृत्यु का लेखा-जोखा रखने के लिए, गणनाकार संशोधन करने के लिए मार्च के पहले सप्ताह में घरों में वापस जाते हैं।
- कई मध्यवर्ती चरण भी हैं, और जनगणना की तैयारी आमतौर पर तीन से चार साल पहले शुरू हो जाती है। पूरे डेटा के संकलन और प्रकाशन में भी महीनों से लेकर कुछ साल तक का समय लग जाता है।
- भारत में जनगणना संवैधानिक रूप से अनिवार्य है। संसद और राज्य विधानसभाओं के निर्वाचन क्षेत्रों के पुनर्गठन के संदर्भ में संविधान में जनगणना की कवायद का बार-बार उल्लेख किया गया है।
- लेकिन संविधान यह नहीं कहता कि जनगणना कब की जानी है, या इस कवायद की आवृत्ति क्या होनी चाहिए। 1948 का भारतीय जनगणना अधिनियम, जो जनगणना करने के लिए कानूनी ढांचा प्रदान करता है, में भी इसके समय या आवधिकता का उल्लेख नहीं है।
- इसलिए, कोई संवैधानिक या कानूनी आवश्यकता नहीं है कि हर 10 साल में जनगणना की जानी चाहिए। हालांकि, यह कवायद 1881 के बाद से हर दशक के पहले साल में बिना किसी असफलता के की जाती है। अधिकांश अन्य देश भी अपनी जनगणना के लिए 10 साल के चक्र का पालन करते हैं। ऑस्ट्रेलिया जैसे देश हैं जो हर पांच साल में ऐसा करते हैं।

स्मार्ट सिटी मिशन टाइमलाइन

समाचार पत्रों में क्यों?

सरकार ने 23 मई को कहा कि स्मार्ट सिटीज मिशन के तहत आवंटित धन का 90% से अधिक का उपयोग अब तक किया जा चुका है, जबकि 73 प्रतिशत परियोजनाएं पूरी हो चुकी है।

त्वरित मुद्दा?

- केंद्रीय शहरी मामलों के मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने एक संसदीय सलाहकार समिति को सूचित किया कि 1 मई तक, स्मार्ट सिटीज मिशन के तहत कुल 38,400 करोड़ रुपये जारी किए गए थे, जिनमें से 35,261 करोड़ रुपये का उपयोग किया गया है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- स्मार्ट सिटीज मिशन में 1.8 लाख करोड़ रुपये की लगभग 7,800 परियोजनाएं हैं, जिनमें से 1.1 लाख करोड़ रुपये की 5,700 से अधिक परियोजनाएं पूरी हो चुकी हैं। शेष सभी परियोजनाओं के 30 जून, 2024 तक पूरा होने की उम्मीद थी।
- जून 2015 में लॉन्च किए गए स्मार्ट सिटीज मिशन को पिछले महीने एक साल का विस्तार मिला। 100 में से केवल 22 शहर मिशन के तहत शुरू की गई सभी परियोजनाओं को पूरा कर पाए हैं।
- यह एक केंद्र प्रायोजित योजना है, जिसे जून 2015 में 100 शहरों को बदलने के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचा और स्वच्छ और टिकाऊ वातावरण प्रदान करने के लिए " स्मार्ट समाधान" के आवेदन के माध्यम से अपने नागरिकों को जीवन की सभ्य गुणवत्ता प्रदान करने के लिए शुरू किया गया था।
- स्मार्ट सिटीज मिशन का मुख्य उद्देश्य उन शहरों को बढ़ावा देना है जो बुनियादी ढांचा, स्वच्छ और टिकाऊ वातावरण प्रदान करते हैं और 'स्मार्ट समाधान' के माध्यम से अपने नागरिकों को जीवन की एक अच्छी गुणवत्ता प्रदान करते हैं।
- इसका उद्देश्य शहर के सामाजिक, आर्थिक, भौतिक और संस्थागत स्तंभों पर व्यापक कार्य के माध्यम से आर्थिक विकास को बढ़ावा देना और जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है।

छोटे मॉड्यूलर रिएक्टर

समाचार पत्रों में क्यों?

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री ने हाल ही में कहा था कि भारत छोटे मॉड्यूलर रिएक्टर जैसी नई तकनीकों पर काम कर रहा है।

त्वरित मुद्दा?

- SMR ऐसे परमाणु रिएक्टर होते हैं जो केवल 10 से 300 मेगावाट बिजली उत्पादित करते हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- इनके मॉड्यूलर डिजाइन और छोटे आकार के चलते जरूरत के मुताबिक एक ही साइट पर इनकी कई यूनिट्स लगाई जा सकती हैं।
- इनकी विविधता और साधारण डिजाइन के चलते इन्हें उन स्थानों पर भी लगाया जा सकता है जो पारंपरिक तौर पर न्यूक्लियर रिएक्टर लगाने के लिए उपयुक्त नहीं होते हैं।
- 13 जुलाई, 2021 को चीन ने हैनान प्रांत में स्थित चांगजियांग परमाणु ऊर्जा संयंत्र में दुनिया के पहले वाणिज्यिक लघु मॉडयूलर रिएक्टर लिंगलोंग-1 का निर्माण शुरू किया था।

- **लाभ:**
  - अपेक्षाकृत छोटे भौतिक पदचिन्ह ;
  - कम पूंजी निवेश ;
  - साइट पर बने पारंपरिक परमाणु रिएक्टरों के विपरीत कारखाने में निर्मित किया जा सकता है;
  - बड़े परमाणु संयंत्रों के लिए संभव नहीं स्थानों में बैठने की क्षमता ;
  - वृद्धिशील बिजली परिवर्धन के प्रावधान ;
- वर्तमान में, भारत में 22 रिएक्टर चालू हैं, जिनकी कुल क्षमता 6,780 मेगावाट है। इनमें से 18 रिएक्टर प्रेशराइज्ड हैवी वाटर रिएक्टर हैं जबकि 4 लाइट वाटर रिएक्टर हैं।
- भारत में कुल बिजली उत्पादन में परमाणु ऊर्जा की हिस्सेदारी 2020-21 में 3.1% थी। भारत ने 2031 तक 6,780 मेगावाट की वर्तमान क्षमता को 22,480 मेगावाट तक बढ़ाने की योजना बनाई है, जो कि शुद्ध-शून्य लक्ष्यों के अनुरूप है।

महत्वपूर्ण ऐतिहासिक प्रतीक 'सेंगोल' (राजदंड)

समाचार पत्रों में क्यों?

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने स्वतंत्रता के एक 'महत्वपूर्ण ऐतिहासिक' प्रतीक 'सेंगोल' (राजदंड) की प्रथा को फिर से शुरू करने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि यह अंग्रेजों से भारतीयों को सत्ता के हस्तांतरण का प्रतीक था।

त्वरित मुद्दा?

- पीएम मोदी नए संसद भवन के उद्घाटन से पहले तमिलनाडु से सेंगोल प्राप्त करेंगे और वह इसे नए संसद भवन के अंदर रखेंगे। सेंगोल स्पीकर की सीट के अधिकार का प्रतीक की जनता में इसे पास रखा जाएगा।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- सेंगोल तमिल भाषा के शब्द 'सेम्मई' से निकला हुआ शब्द है। इसका अर्थ होता है धर्म, सच्चाई और निष्ठा। सेंगोल राजदंड भारतीय सम्राट की शक्ति और अधिकार का प्रतीक हुआ करता था।
- 14 अगस्त 1947 को 10:45 बजे के करीब जवाहरलाल नेहरू ने तमिलनाडु की जनता से इस सेंगोल को स्वीकार किया था। यह अंग्रेजों से इस देश के लोगों के लिए सत्ता के हस्तांतरण का संकेत था।

- इसे वर्तमान में इलाहाबाद के एक संग्रहालय में रखा गया था और इसे नए संसद भवन में ले जाया जाएगा।
- सेंगोल जिसे दिया जाता है उससे न्यायसंगत और निष्पक्ष शासन प्रस्तुत करने की अपेक्षा की जाती है।
- सेंगोल को बनाने का सुझाव नेहरू जी को श्री राजगोपालाचारी ने दिया था। राजगोपालाचारी ने तमिलनाडु के तंजौर जिले में स्थित एक धार्मिक मठ, थिरुववदथुराई अधीनम से संपर्क किया।
- इस प्रकार तिरुवदुथुराई अधीनम के शीर्ष पुजारी द्वारा एक सेंगोल को बनाया गया जिसकी लंबाई लगभग पांच फीट थी।
- सेंगोल को तैयार करने का काम चेन्नई के जाने-माने जौहरी वुम्मिदी बंगारू चेट्टी को सौंपा गया था, जिनको इस क्षेत्र में महारत हासिल थी।
- सेंगोल के निर्माण में शामिल और वुम्मिदी परिवार के दो सदस्य वुम्मिदी एथिराजुलु (96 वर्ष) और वुम्मिदी सुधाकर (88 वर्ष) आज भी जीवित हैं।
- भारत की स्वतंत्रता के समय इस पवित्र सेंगोल को प्राप्त करने की घटना को दुनियाभर के मीडिया ने व्यापक रूप से कवर किया था।